भा.वा.अ.शि.प.-पारिस्थितिक पुनर्स्थापन केन्द्र, प्रयागराज द्वारा वन विज्ञान केन्द्र, गोरखपुर के अन्तर्गत **"उत्तर प्रदेश के कृषिवानिकी मॉडल"** विषय पर आधारित दो दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आरम्भ दिनांक 29.09.2024 को किया गया। प्रथम दिवस में कार्यक्रम की शुरुआत मुख्य अतिथि डॉ. सत्य प्रकाश श्रीवास्तव, उपनिदेशक कृषि एवं केन्द्र प्रमुख डॉ. संजय सिंह के साथ उपस्थित विशिष्ट गणमान्यों द्वारा दीप प्रज्वलित करके किया गया। स्वागत भाषण में केन्द्र प्रमुख डॉ. सिंह ने आयोजित कार्यक्रम पर प्रकाश डाला। उन्होने बताया कि कृषिवानिकी के माध्यम से हरित आवरण के साथ-साथ किसानों की आजीविका में भी वृद्धि सम्भव है। केन्द्र के वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं कार्यक्रम समन्वयक, आलोक यादव द्वारा प्रशिक्षण कार्यक्रम की रूपरेखा से अवगत कराया गया। मुख्य अतिथि डॉ. सत्य प्रकाश श्रीवास्वत ने केन्द्र द्वारा आयोजित कार्यक्रम की सराहना करते हुए कहा कि वैज्ञानिक एवं कृषकों के आपसी संवाद के बाद कृषिवानिकी मॉडलों को विकसित किया जाना चाहिए। कृषिवानिकी को बढ़ावा देने के लिए कृषि विभाग के प्रसार तंत्र एवं संशाधनों का उपयोग किया जा सकता है। कार्यक्रम में उपस्थित प्रतिभागियों को धन्यवाद ज्ञापन वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. अनुभा श्रीवास्तव द्वारा किया गया। प्रथम तकनीकी सत्र में वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. अनीता तोमर द्वारा पॉपलर आधारित कृषिवानिकी एवं डॉ. नीलम खरे, एसो. प्रोफेसर, वानिकी महाविद्यालय, शुआट्स द्वारा चिरौंजी की खेती की सम्भावनाओं पर विस्तृत चर्चा की गयी। प्रतापगढ़ के प्रगतिशील कृषक उत्कृष्ठ पाण्डेय ने कृषिवानिकी में चन्दन की खेती विषय पर प्रकाश डाला। केन्द्र की वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. अनुभा श्रीवास्तव द्वारा कृषिवानिकी के अन्तर्गत यूकेलिप्टस का उपयोग कृषि योग्य भूमि पर उच्च स्तर पर किया जाता है। उन्होने बताया कि केन्द्र के पास उत्तर प्रदेश के किसानों के लिए उपयुक्त यूकेलिप्टस एवं पॉपलर के क्लोन उपलब्ध हैं। प्रशिक्षण कार्यक्रम के प्रथम दिवस के समापन सत्र में प्रतिभागियों के साथ वार्तालाप किया गया, जिसमें उनकी कृषिवानिकी सम्बन्धित समस्याओं का निदान करने का प्रयास किया गया। कार्यक्रम में कृषिवानिकी प्रशिक्षण हेतु लगभग 100 किसानों ने प्रतिभागिता किया।

संजय सिंह

प्रशिक्षण कार्यक्रम
वन विज्ञान केन्द्र के अन्तर्गत
"उत्तर प्रदेश के कृषि वानिकी मॉडल"
भा.वा.अ.शि.प.-पारिस्थितिक पुनर्स्थापन केन्द्र, प्रयागराज
(भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद, देहरादून)

संजय सिंह
डॉ. सत्य प्रकाश श्रीवास्तव

CFRE -ER

मुख्य रोपण क्षेत्र
INDIA
NEPAL
Southern limit of indigenous poplars;
• उत्तर–पश्चिमी भारत के मैदानी भाग (पंजाब, हरियाणा
• उत्तराखण्ड, हिमाचल प्रदेश तथा जम्मू कश्मीर के निचले
acer

Dimensions of Industrial
Dimensions of Industrial Agroforestry
acer
ICFRE

ERC

MANDATE
• To undertake focused research on rehabilitation of degraded ecosystems and difficult /stress sites and promotion of Agro-forestry

भा.वा.अ.शि.प.-पारिस्थितिक पुनर्स्थापन केन्द्र, प्र
(भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद्, देहरादून)
कृषि वानिकी
प्रजातियाँ एवं प्रबन्धन

प्रशिक्षण प्रमाण पत्र

प्रशिक्षण प्रमाण पत्र

भा.वा.अ.शि.प.-पारिस्थितिक पुनर्स्थापन केन्द्र, प्रयागराज

प्रशिक्षण कार्यक्रम
"उत्तर प्रदेश के कृषि वानिकी मॉडल"
MANDATE
• To undertake focused research on rehabilitation of degraded ecosystems and difficult /stress sites and promotion of Agro-forestry

प्रशिक्षण कार्यक्रम
"उत्तर प्रदेश के कृषि वानिकी मॉडल"
भा.वा.अ.शि.प.-पारिस्थितिक पुनर्स्थापन केन्द्र, प्रयागराज

उत्तर प्रदेश कृषिवानिकी मॉडल पर आधारित दो दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम प्रारम्भ

प्रभात वंदना संवाददाता

प्रयागराज। भा.वा.अ.शि.प. पारिस्थितिक पुनर्स्थापन केन्द्र, प्रयागराज द्वारा वन विज्ञान केन्द्र, गोरखपुर के अन्तर्गत 'उत्तर प्रदेश के कृषिवानिकी मॉडल' विषय पर आधारित दो दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का प्रारम्भ किया गया। प्रथम दिवस में कार्यक्रम की शुरुआत मुख्य अतिथि डॉ. सत्य प्रकाश श्रीवास्तव, उप कृषि निदेशक , प्रयागराज एवं केन्द्र प्रमुख डॉ. संजय सिंह के साथ उपस्थित विशिष्ट गणमान्यों द्वारा दीप प्रज्जवलित करके किया गया। स्वागत भाषण में केन्द्र प्रमुख डॉ. सिंह ने आयोजित कार्यक्रम पर प्रकाश डाला। उन्होने बताया कि कृषिवानिकी के माध्यम से हरित आवरण के साथ-साथ किसानों की आजीविका में भी वृद्धि सम्भव है। केन्द्र के वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं कार्यक्रम समन्वयक, आलोक यादव द्वारा प्रशिक्षण कार्यक्रम की रूपरेखा से अवगत कराया गया। मुख्य अतिथि डॉ. सत्य प्रकाश श्रीवास्तव ने केन्द्र द्वारा आयोजित कार्यक्रम की सराहना करते हुए कहा कि वैज्ञानिक एवं कृषकों के आपसी संवाद के बाद कृषिवानिकी मॉडलों को विकसित किया जाना चाहिए। कृषिवानिकी को बढ़ावा देने के लिए कृषि विभाग के प्रसार तंत्र एवं संशाधनों का उपयोग किया जा सकता है। कार्यक्रम में उपस्थित प्रतिभागियों को धन्यवाद ज्ञापन वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. अनुभा श्रीवास्तव द्वारा किया गया। प्रथम तकनीकी सत्र में वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. अनीता तोमर द्वारा पॉपलर आधारित कृषिवानिकी एवं डॉ. नीलम खरे, एसोसिएट प्रोफेसर, शुआटस द्वारा चिरौंजी की खेती की सम्भावनाओं पर विस्तृत चर्चा की गयी। वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. कुमुद दूबे द्वारा मीलिया आधारित कृषिवानिकी विषय पर विस्तृत चर्चा किया गया। प्रतापगढ़ के प्रगतिशील कृषक उत्कृष्ठ पाण्डेय ने कृषिवानिकी में चन्दन की खेती विषय पर प्रकाश डाला। केन्द्र की वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. अनुभा श्रीवास्तव द्वारा कृषिवानिकी के अन्तर्गत यूकेलिप्टस का उपयोग कृषि योग्य भूमि पर उच्च स्तर पर किया जाता है। उन्होने बताया कि केन्द्र के पास उत्तर प्रदेश के लिए उपयुक्त यूकेलिप्टस एवं पॉपलर के क्लोन किसानों के लिए उपलब्ध हैं। प्रशिक्षण कार्यक्रम के प्रथम दिवस के समापन सत्र में प्रतिभागियों के साथ वार्तालाप किया गया, जिसमें उनकी कृषिवानिकी सम्बन्धित समस्याओं का निदान करने का प्रयास किया गया। कार्यक्रम में कृषिवानिकी प्रशिक्षण हेतु लगभग 100 किसानों ने प्रतिभागिता की।

किसानों को बताए कृषिवानिकी के फायदे

प्रयागराज। पारिस्थितिक पुनर्स्थापन केंद्र और वन विज्ञान केंद्र गोरखपुर की ओर से कृषिवानिकी मॉडल पर किसानों का दो दिवसीय प्रशिक्षण सोमवार से शुरू हुआ। शुभारंभ उपनिदेशक कृषि डॉ. सत्य प्रकाश श्रीवास्तव और केंद्र प्रमुख डॉ. संजय सिंह ने किया। वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. अनीता तोमर ने पॉपलर आधारित कृषिवानिकी और शुआटस की एसोसिएट प्रोफेसर डॉ. नीलम खरे ने चिरौंजी की खेती की जानकारी दी। वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. कुमुद दुबे ने मीलिया डूबिया के फायदे बताए। प्रतापगढ़ के प्रगतिशील कृषक उत्कृष्ट पांडेय ने चंदन की खेती के अपने अनुभव साझा किए। वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. अनुभा श्रीवास्तव और आलोक यादव ने भी किसानों को जानकारी दी। संवाद

कार्यशाला में कृषि वानिकी को बढ़ावा देने पर जोर

PRAYAGRAJ (23 Sept): पारिस्थितिक पुनर्स्थापन केंद्र द्वारा वन विज्ञान केंद्र गोरखपुर के अंतर्गत उत्तर प्रदेश के कृषि वानिकी माडल विषय पर आधारित दो दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम की शुरुआत सोमवार से हुई. पहले दिन कार्यक्रम की शुरुआत मुख्य अतिथि डा सत्य प्रकाश श्रीवास्तव उपनिदेशक कृषि एवं केंद्र प्रमुख डा. संजय सिंह दीपप्रज्ज्वलित कर किया.

मुख्य अतिथि डा. सत्य प्रकाश श्रीवास्तव ने केंद्र द्वारा आयोजित कार्यक्रम की सराहना करते हुए कहा कि वैज्ञानिक एवं कृषकों के आपसी संवाद के बाद कृषिवानिकी माडलों को विकसित किया जाना चाहिए. कृषि वानिकी को बढ़ावा देने के लिए कृषि विभाग के प्रसार तंत्र एवं संशाधनों का उपयोग किया जा सकता है.

धन्यवाद ज्ञापन वरिष्ठ वैज्ञानिक डा. अनुभा श्रीवास्तव द्वारा किया गया. प्रथम तकनीकी सत्र में वरिष्ठ वैज्ञानिक डा. अनीता तोमर ने पापलर आधारित कृषि वानिकी एवं डा. नीलम खरे चिरौंजी की खेती की संभावनाओं पर विस्तृत चर्चा किया. वरिष्ठ वैज्ञानिक डा. कुमुद दूबे द्वारा मीलिया आधारित कृषि वानिकी विषय पर विस्तृत चर्चा किया.

हिन्दुस्थान समाचार Hindusthan Samachar
स्थापित — 1948
बहुभाषी न्यूज एजेंसी
Tuesday, 24 September, 2024

SUBSCRIBER LOGIN
STAFFLOGIN
HSNS LOGIN

कृषि वानिकी मॉडलों को विकसित किया जाना चाहिए : कृषि उपनिदेशक

23 Sep 2024 17:54:32

-उप्र के कृषि वानिकी मॉडल पर दो दिवसीय प्रशिक्षण शुरू

प्रयागराज, 23 सितम्बर (हि.स.)। वैज्ञानिक एवं कृषकों के आपसी संवाद के बाद कृषि वानिकी मॉडलों को विकसित किया जाना चाहिए। कृषि वानिकी को बढ़ावा देने के लिए कृषि विभाग के प्रसार तंत्र एवं संशाधनों का उपयोग किया जा सकता है।

उक्त विचार मुख्य अतिथि उपनिदेशक कृषि डॉ.सत्य प्रकाश श्रीवास्तव ने भा.वा.अ.शि.प पारिस्थितिक पुनर्स्थापन केन्द्र, प्रयागराज द्वारा वन विज्ञान केन्द्र, गोरखपुर के अन्तर्गत "उत्तर प्रदेश के कृषि वानिकी मॉडल" विषय पर आधारित दो दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का शुभारम्भ करते हुए व्यक्त किया।

सोमवार को आयोजित कार्यक्रम में पारिस्थितिकी पुनर्स्थापन केन्द्र प्रयागराज के प्रमुख डॉ. संजय सिंह ने बताया कि कृषि वानिकी के माध्यम से हरित आवरण के साथ-साथ किसानों की आजीविका में भी वृद्धि सम्भव है। केन्द्र के वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं कार्यक्रम समन्वयक आलोक यादव ने प्रशिक्षण कार्यक्रम की रूपरेखा से अवगत कराया।

प्रथम तकनीकी सत्र में वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ.अनीता तोमर ने पॉपुलर आधारित कृषि वानिकी एवं डॉ. नीलम खरे एसोसिएट प्रोफेसर शुआटस ने चिरौंजी की खेती की सम्भावनाओं पर तथा वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. कुमुद दूबे ने मीलिया आधारित कृषि वानिकी विषय पर चर्चा की। प्रतापगढ़ के प्रगतिशील कृषक उत्कृष्ट पाण्डेय ने कृषि वानिकी में चन्दन की खेती पर प्रकाश डाला। केन्द्र की वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. अनुभा श्रीवास्तव ने कृषि वानिकी के अन्तर्गत यूकेलिप्टस का उपयोग कृषि योग्य भूमि पर उच्च स्तर पर किया जाता है। उन्होंने बताया कि केन्द्र के पास उत्तर प्रदेश के लिए उपयुक्त यूकेलिप्टस एवं पॉपुलर के क्लोन किसानों के लिए उपलब्ध हैं।

कार्यक्रम में धन्यवाद ज्ञापन वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. अनुभा श्रीवास्तव ने किया। प्रशिक्षण कार्यक्रम के प्रथम दिवस कृषि वानिकी प्रशिक्षण हेतु लगभग 100 किसानों ने प्रतिभागिता की।

हिन्दुस्थान समाचार / विद्याकांत मिश्र

उत्तर प्रदेश के कृषिवानिकी मॉडल पर प्रशिक्षण

हरबात संवाददाता

प्रयागराज । भा.वा.अ.शि.प. पारिस्थितिक पुनर्स्थापन केन्द्र, प्रयागराज द्वारा वन विज्ञान केन्द्र, गोरखपुर के अन्तर्गत 'उत्तर प्रदेश के कृषिवानिकी मॉडल' विषय पर आधारित दो दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का प्रारम्भ आज दिनांक 23.09.2024 को किया गया। प्रथम दिवस में कार्यक्रम की शुरुआत मुख्य अतिथि डॉ. सत्य प्रकाश श्रीवास्तव, उपनिदेशक कृषि एवं केन्द्र प्रमुख डॉ. संजय सिंह के साथ उपस्थित विशिष्ट गणमान्यों द्वारा दीप प्रज्जवलित करके किया गया। स्वागत भाषण में केन्द्र प्रमुख डॉ. सिंह ने आयोजित कार्यक्रम पर प्रकाश डाला। उन्होने बताया कि कृषिवानिकी के माध्यम से हरित आवरण के साथ-साथ किसानों की आजीविका में भी वृद्धि सम्भव है। केन्द्र के वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं कार्यक्रम समन्वयक, आलोक यादव द्वारा प्रशिक्षण कार्यक्रम की रूपरेखा से अवगत कराया गया। मुख्य अतिथि डॉ. सत्य प्रकाश श्रीवास्तव ने केन्द्र द्वारा आयोजित कार्यक्रम की सराहना करते हुए कहा कि वैज्ञानिक एवं कृषकों के आपसी संवाद के बाद कृषिवानिकी मॉडलों को विकसित

किया जाना चाहिए। कृषिवानिकी को बढ़ावा देने के लिए कृषि विभाग के प्रसार तंत्र एवं संशाधनों का उपयोग किया जा सकता है।

कार्यक्रम में उपस्थित प्रतिभागियों को धन्यवाद ज्ञापन वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. अनुभा श्रीवास्तव द्वारा किया गया। प्रथम तकनीकी सत्र में वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. अनीता तोमर द्वारा पॉपलर आधारित कृषिवानिकी एवं डॉ. नीलम खरे, एसोसिएट प्रोफेसर, शुआटस द्वारा चिरौंजी की खेती की सम्भावनाओं पर विस्तृत चर्चा की गयी। वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. कुमुद दूबे द्वारा मीलिया आधारित कृषिवानिकी विषय पर विस्तृत चर्चा किया गया। प्रतापगढ़ के प्रगतिशील कृषक उत्कृष्ठ पाण्डेय ने कृषिवानिकी में चन्दन की खेती विषय पर प्रकाश डाला। केन्द्र की वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. अनुभा श्रीवास्तव द्वारा कृषिवानिकी के अन्तर्गत यूकेलिप्टस का उपयोग कृषि योग्य भूमि पर उच्च स्तर पर किया जाता है। उन्होने बताया कि केन्द्र के पास उत्तर प्रदेश के लिए उपयुक्त यूकेलिप्टस एवं पॉपलर के क्लोन किसानों के लिए उपलब्ध हैं। प्रशिक्षण कार्यक्रम के प्रथम दिवस के समापन सत्र में प्रतिभागियों के साथ वार्तालाप किया गया, जिसमें उनकी कृषिवानिकी सम्बन्धित समस्याओं का निदान करने का प्रयास किया गया। कार्यक्रम में कृषिवानिकी प्रशिक्षण हेतु लगभग 100 किसानों ने प्रतिभागिता की।

कृषि वानिकी मॉडलों को विकसित किया जाना चाहिए : कृषि उपनिदेशक

प्रयागराज(हि.स.)। वैज्ञानिक एवं कृषकों के आपसी संवाद के बाद कृषि वानिकी मॉडलों को विकसित किया जाना चाहिए। कृषि वानिकी को बढ़ावा देने के लिए कृषि विभाग के प्रसार तंत्र एवं संशाधनों का उपयोग किया जा सकता है।

उक्त विचार मुख्य अतिथि उपनिदेशक कृषि डॉ.सत्य प्रकाश श्रीवास्तव ने भा.वा.अ.शि.प पारिस्थितिक पुनर्स्थापन केन्द्र, प्रयागराज द्वारा वन विज्ञान केन्द्र, गोरखपुर के अन्तर्गत ÷उत्तर प्रदेश के कृषि वानिकी मॉडल विषय पर आधारित दो दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का शुभारम्भ करते हुए व्यक्त किया।

सोमवार को आयोजित कार्यक्रम में पारिस्थितिक पुनर्स्थापन केन्द्र प्रयागराज के प्रमुख डॉ. संजय सिंह ने बताया कि कृषि वानिकी के माध्यम से हरित आवरण के साथ-साथ किसानों की आजीविका में भी वृद्धि सम्भव है। केन्द्र के वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं कार्यक्रम समन्वयक आलोक यादव ने प्रशिक्षण कार्यक्रम की रूपरेखा से अवगत कराया।

प्रथम तकनीकी सत्र में वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ.अनीता तोमर ने पॉपलर आधारित कृषि वानिकी एवं डॉ. नीलम खरे एसोसिएट प्रोफेसर शुआटस ने चिरौंजी की खेती की सम्भावनाओं पर तथा वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. कुमुद दूबे ने मीलिया आधारित कृषि वानिकी विषय पर चर्चा की। प्रतापगढ़ के प्रगतिशील कृषक उत्कृष्ठ पाण्डेय ने कृषि वानिकी में चन्दन की खेती पर प्रकाश डाला। केन्द्र की वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. अनुभा श्रीवास्तव ने कृषि वानिकी के अन्तर्गत यूकेलिप्टस का उपयोग कृषि योग्य भूमि पर उच्च स्तर पर किया जाता है। उन्होने बताया कि केन्द्र के पास उत्तर प्रदेश के लिए उपयुक्त यूकेलिप्टस एवं पॉपलर के क्लोन किसानों के लिए उपलब्ध हैं।

कार्यक्रम में धन्यवाद ज्ञापन वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. अनुभा श्रीवास्तव ने किया।

उत्तर प्रदेश के कृषिवानिकी मॉडल पर प्रशिक्षण का हुआ आयोजन

संगम शपथ संवाददाता

प्रयागराज । भा.वा.अ.शि.प. पारिस्थितिक पुनर्स्थापन केन्द्र, प्रयागराज द्वारा वन विज्ञान केन्द्र, गोरखपुर के अन्तर्गत 'उत्तर प्रदेश के कृषिवानिकी मॉडल' विषय पर आधारित दो दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का प्रारम्भ आज दिनांक 23.09.2024 को किया गया। प्रथम दिवस में कार्यक्रम की शुरुआत मुख्य अतिथि डॉ. सत्य प्रकाश श्रीवास्तव, उपनिदेशक कृषि एवं केन्द्र प्रमुख डॉ. संजय सिंह के साथ उपस्थित विशिष्ट गणमान्यों द्वारा दीप प्रज्जवलित करके किया गया। स्वागत भाषण में केन्द्र प्रमुख डॉ. सिंह ने आयोजित कार्यक्रम पर प्रकाश डाला। उन्होने बताया कि कृषिवानिकी के माध्यम से हरित आवरण के साथ-साथ किसानों की आजीविका में भी वृद्धि सम्भव है। केन्द्र के वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं कार्यक्रम समन्वयक, आलोक यादव द्वारा प्रशिक्षण कार्यक्रम की रूपरेखा से अवगत कराया गया। मुख्य अतिथि डॉ. सत्य प्रकाश श्रीवास्तव ने केन्द्र द्वारा आयोजित कार्यक्रम की सराहना करते हुए कहा कि वैज्ञानिक एवं कृषकों के आपसी संवाद के बाद कृषिवानिकी मॉडलों को विकसित किया जाना चाहिए। कृषिवानिकी को बढ़ावा देने के लिए कृषि विभाग के प्रसार तंत्र एवं संशाधनों का उपयोग किया जा सकता है। कार्यक्रम में उपस्थित प्रतिभागियों को धन्यवाद ज्ञापन वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. अनुभा श्रीवास्तव द्वारा किया गया। प्रथम तकनीकी सत्र में वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. अनीता तोमर द्वारा पॉपलर आधारित कृषिवानिकी एवं डॉ. नीलम खरे, एसोसिएट प्रोफेसर, शुआटस द्वारा चिरौंजी की खेती की सम्भावनाओं पर विस्तृत चर्चा की गयी। वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. कुमुद दूबे द्वारा मीलिया आधारित कृषिवानिकी विषय पर विस्तृत चर्चा किया गया। प्रतापगढ़ के प्रगतिशील कृषक उत्कृष्ठ पाण्डेय ने कृषिवानिकी में चन्दन की खेती विषय पर प्रकाश डाला। केन्द्र की वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. अनुभा श्रीवास्तव द्वारा कृषिवानिकी के अन्तर्गत यूकेलिप्टस का उपयोग कृषि योग्य भूमि पर उच्च स्तर पर किया जाता है। उन्होने बताया कि केन्द्र के पास उत्तर प्रदेश के लिए उपयुक्त यूकेलिप्टस एवं पॉपलर के क्लोन किसानों के लिए उपलब्ध हैं। प्रशिक्षण कार्यक्रम के प्रथम दिवस के समापन सत्र में प्रतिभागियों के साथ वार्तालाप किया गया, जिसमें उनकी कृषिवानिकी सम्बन्धित समस्याओं का निदान करने का प्रयास किया गया। कार्यक्रम में कृषिवानिकी प्रशिक्षण हेतु लगभग 100 किसानों ने प्रतिभागिता की।

कृषि वानिकी से किसानों की आय में होगी बढ़ोतरी

प्रयागराज, वरिष्ठ संवाददाता। वन अनुसंधान केंद्र में गोरखपुर वन विज्ञान केंद्र के तहत 'उत्तर प्रदेश के कृषि वानिकी मॉडल' विषय पर आधारित दो दिनी प्रशिक्षण सोमवार को शुरू हुआ। मुख्य अतिथि उप निदेशक कृषि डॉ. सत्य प्रकाश सिंह, संस्थान प्रमुख डॉ. संजय सिंह व अन्य अतिथियों ने दीप प्रज्ज्वलित कर कार्यक्रम की शुरुआत की।

संस्थान प्रमुख डॉ. संजय सिंह ने कहा कि कृषि वानिकी के माध्यम से हरित आवरण के साथ-साथ किसानों की आजीविका में भी वृद्धि संभव है। केंद्र के वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं कार्यक्रम समन्वयक आलोक यादव ने प्रशिक्षण कार्यक्रम की रूपरेखा बताई। मुख्य अतिथि डॉ. सत्य प्रकाश श्रीवास्तव ने केंद्र के कार्यों की सराहना की। उन्होंने कहा कि वैज्ञानिक व कृषकों के आपसी संवाद के बाद कृषि-वानिकी मॉडलों को विकसित किया जाना चाहिए। कृषि वानिकी को बढ़ावा देने के लिए कृषि विभाग के प्रसार तंत्र एवं संशाधनों का उपयोग किया जा सकता है। वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. अनुभा श्रीवास्तव ने धन्यवाद दिया। पहले तकनीकी सत्र में वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. अनीता तोमर ने पॉपलर आधारित कृषि वानिकी व डॉ. नीलम खरे, एसोसिएट प्रोफेसर शुआट्स ने चिरौंजी की खेती की सम्भावनाओं पर चर्चा की। वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. कुमुद दूबे ने मीलिया आधारित कृषि वानिकी पर चर्चा की। प्रतापगढ़ के प्रगतिशील कृषक उत्कृष्ठ पांडेय ने कृषि वानिकी में चंदन की खेती विषय पर प्रकाश डाला। कार्यक्रम में कृषि वानिकी प्रशिक्षण के लिए 100 से अधिक किसान जुटे।

वन अनुसंधान केंद्र में सोमवार को प्रशिक्षण में जानकारी देते डॉ. संजय सिंह।

उत्तर प्रदेश कृषिवानिकी मॉडल पर आधारित दो दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम प्रारम्भ

प्रयाग केसरी संवाददाता

प्रयागराज। भा.वा.अ.शि.प. पारिस्थितिक पुनर्स्थापन केन्द्र, प्रयागराज द्वारा वन विज्ञान केन्द्र, गोरखपुर के अन्तर्गत 'उत्तर प्रदेश के कृषिवानिकी मॉडल' विषय पर आधारित दो दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का प्रारम्भ किया गया। प्रथम दिवस में कार्यक्रम की शुरुआत मुख्य अतिथि डॉ. सत्य प्रकाश श्रीवास्तव, उप कृषि निदेशक , प्रयागराज एवं केन्द्र प्रमुख डॉ. संजय सिंह के साथ उपस्थित विशिष्ट गणमान्यों द्वारा दीप प्रज्जवलित करके किया गया। स्वागत भाषण में केन्द्र प्रमुख डॉ. सिंह ने आयोजित कार्यक्रम पर प्रकाश डाला। उन्होने बताया कि कृषिवानिकी के माध्यम से हरित आवरण के साथ-साथ किसानों की आजीविका में भी वृद्धि सम्भव है। केन्द्र के वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं कार्यक्रम समन्वयक, आलोक यादव द्वारा प्रशिक्षण कार्यक्रम की रूपरेखा से अवगत कराया गया। मुख्य अतिथि डॉ. सत्य प्रकाश श्रीवास्तव ने केन्द्र द्वारा आयोजित कार्यक्रम की सराहना करते हुए कहा कि वैज्ञानिक एवं कृषकों के आपसी संवाद के बाद कृषिवानिकी मॉडलों को विकसित किया जाना चाहिए। कृषिवानिकी को बढ़ावा देने के लिए कृषि विभाग के प्रसार तंत्र एवं संशाधनों का उपयोग किया जा सकता है। कार्यक्रम में उपस्थित प्रतिभागियों को धन्यवाद ज्ञापन वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. अनुभा श्रीवास्तव द्वारा किया गया। प्रथम तकनीकी सत्र में वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. अनीता तोमर द्वारा पॉपलर आधारित कृषिवानिकी एवं डॉ. नीलम खरे, एसोसिएट प्रोफेसर, शुआटस द्वारा चिरौंजी की खेती की सम्भावनाओं पर विस्तृत चर्चा की गयी। वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. कुमुद दूबे द्वारा मीलिया आधारित कृषिवानिकी विषय पर विस्तृत चर्चा किया गया। प्रतापगढ़ के प्रगतिशील कृषक उत्कृष्ठ पाण्डेय ने कृषिवानिकी में चन्दन की खेती विषय पर प्रकाश डाला। केन्द्र की वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. अनुभा श्रीवास्तव द्वारा कृषिवानिकी के अन्तर्गत यूकेलिप्टस का उपयोग कृषि योग्य भूमि पर उच्च स्तर पर किया जाता है। उन्होने बताया कि केन्द्र के पास उत्तर प्रदेश के लिए उपयुक्त यूकेलिप्टस एवं पॉपलर के क्लोन किसानों के लिए उपलब्ध हैं। प्रशिक्षण कार्यक्रम के प्रथम दिवस के समापन सत्र में प्रतिभागियों के साथ वार्तालाप किया गया, जिसमें उनकी कृषिवानिकी सम्बन्धित समस्याओं का निदान करने का प्रयास किया गया। कार्यक्रम में कृषिवानिकी प्रशिक्षण हेतु लगभग 100 किसानों ने प्रतिभागिता की।

उत्तर प्रदेश के कृषिवानिकी मॉडल पर प्रशिक्षण

हरबात संवाददाता

प्रयागराज । भा.वा.अ.शि.प. पारिस्थितिक पुनर्स्थापन केन्द्र, प्रयागराज द्वारा वन विज्ञान केन्द्र, गोरखपुर के अन्तर्गत 'उत्तर प्रदेश के कृषिवानिकी मॉडल' विषय पर आधारित दो दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का प्रारम्भ आज दिनांक 23.09.2024 को किया गया। प्रथम दिवस में कार्यक्रम की शुरुआत मुख्य अतिथि डॉ. सत्य प्रकाश श्रीवास्तव, उपनिदेशक कृषि एवं केन्द्र प्रमुख डॉ. संजय सिंह के साथ उपस्थित विशिष्ट गणमान्यों द्वारा दीप प्रज्जवलित करके किया गया। स्वागत भाषण में केन्द्र प्रमुख डॉ. सिंह ने आयोजित कार्यक्रम पर प्रकाश डाला। उन्होने बताया कि कृषिवानिकी के माध्यम से हरित आवरण के साथ-साथ किसानों की आजीविका में भी वृद्धि सम्भव है। केन्द्र के वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं कार्यक्रम समन्वयक, आलोक यादव द्वारा प्रशिक्षण कार्यक्रम की रूपरेखा से अवगत कराया गया। मुख्य अतिथि डॉ. सत्य प्रकाश श्रीवास्तव ने केन्द्र द्वारा आयोजित कार्यक्रम की सराहना करते हुए कहा कि वैज्ञानिक एवं कृषकों के आपसी संवाद के बाद कृषिवानिकी मॉडलों को विकसित किया जाना चाहिए। कृषिवानिकी को बढ़ावा देने के लिए कृषि विभाग के प्रसार तंत्र एवं संशाधनों का उपयोग किया जा सकता है।

कार्यक्रम में उपस्थित प्रतिभागियों को धन्यवाद ज्ञापन वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. अनुभा श्रीवास्तव द्वारा किया गया। प्रथम तकनीकी सत्र में वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. अनीता तोमर द्वारा पॉपलर आधारित कृषिवानिकी एवं डॉ. नीलम खरे, एसोसिएट प्रोफेसर, शुआटस द्वारा चिरौंजी की खेती की सम्भावनाओं पर विस्तृत चर्चा की गयी। वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. कुमुद दूबे द्वारा मीलिया आधारित कृषिवानिकी विषय पर विस्तृत चर्चा किया गया। प्रतापगढ़ के प्रगतिशील कृषक उत्कृष्ठ पाण्डेय ने कृषिवानिकी में चन्दन की खेती विषय पर प्रकाश डाला। केन्द्र की वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. अनुभा श्रीवास्तव द्वारा कृषिवानिकी के अन्तर्गत यूकेलिप्टस का उपयोग कृषि योग्य भूमि पर उच्च स्तर पर किया जाता है। उन्होने बताया कि केन्द्र के पास उत्तर प्रदेश के लिए उपयुक्त यूकेलिप्टस एवं पॉपलर के क्लोन किसानों के लिए उपलब्ध हैं। प्रशिक्षण कार्यक्रम के प्रथम दिवस के समापन सत्र में प्रतिभागियों के साथ वार्तालाप किया गया, जिसमें उनकी कृषिवानिकी सम्बन्धित समस्याओं का निदान करने का प्रयास किया गया। कार्यक्रम में कृषिवानिकी प्रशिक्षण हेतु लगभग 100 किसानों ने प्रतिभागिता की।

उत्तर प्रदेश के कृषिवानिकी मॉडल पर प्रशिक्षण

(सहजसत्ता संवाददाता)

प्रयागराज । भा.वा.अ.शि.प. पारिस्थितिक पुनर्स्थापन केन्द्र, प्रयागराज द्वारा वन विज्ञान केन्द्र, गोरखपुर के अन्तर्गत 'उत्तर प्रदेश के कृषिवानिकी मॉडल' विषय पर आधारित दो दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का प्रारम्भ आज दिनांक 23.09.2024 को किया गया। प्रथम दिवस में कार्यक्रम की शुरुआत मुख्य अतिथि डॉ. सत्य प्रकाश श्रीवास्तव, उपनिदेशक कृषि एवं केन्द्र प्रमुख डॉ. संजय सिंह के साथ उपस्थित विशिष्ट गणमान्यों द्वारा दीप प्रज्जवलित करके किया गया। स्वागत भाषण में केन्द्र प्रमुख डॉ. सिंह ने आयोजित कार्यक्रम पर प्रकाश डाला। उन्होने बताया कि कृषिवानिकी के माध्यम से हरित आवरण के साथ-साथ किसानों की आजीविका में भी वृद्धि सम्भव है। केन्द्र के वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं कार्यक्रम समन्वयक, आलोक यादव द्वारा प्रशिक्षण कार्यक्रम की रूपरेखा से अवगत कराया गया। मुख्य अतिथि डॉ. सत्य प्रकाश श्रीवास्तव ने केन्द्र द्वारा आयोजित कार्यक्रम की सराहना करते हुए कहा कि वैज्ञानिक एवं कृषकों के आपसी संवाद के बाद कृषिवानिकी मॉडलों को विकसित किया जाना चाहिए। कृषिवानिकी को बढ़ावा देने के लिए कृषि विभाग के प्रसार तंत्र एवं संशाधनों का उपयोग किया जा सकता है। कार्यक्रम में उपस्थित प्रतिभागियों को धन्यवाद ज्ञापन वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. अनुभा श्रीवास्तव द्वारा किया गया। प्रथम तकनीकी सत्र में वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. अनीता तोमर द्वारा पॉपलर आधारित कृषिवानिकी एवं डॉ. नीलम खरे, एसोसिएट प्रोफेसर, शुआटस द्वारा चिरौंजी की खेती की सम्भावनाओं पर विस्तृत चर्चा की गयी। वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. कुमुद दूबे द्वारा मीलिया आधारित कृषिवानिकी विषय पर विस्तृत चर्चा किया गया। प्रतापगढ़ के प्रगतिशील कृषक उत्कृष्ठ पाण्डेय ने कृषिवानिकी में चन्दन की खेती विषय पर प्रकाश डाला। केन्द्र की वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. अनुभा श्रीवास्तव द्वारा कृषिवानिकी के अन्तर्गत यूकेलिप्टस का उपयोग कृषि योग्य भूमि पर उच्च स्तर पर किया जाता है। उन्होने बताया कि केन्द्र के पास उत्तर प्रदेश के लिए उपयुक्त यूकेलिप्टस एवं पॉपलर के क्लोन किसानों के लिए उपलब्ध हैं। प्रशिक्षण कार्यक्रम के प्रथम दिवस के समापन सत्र में प्रतिभागियों के साथ वार्तालाप किया गया, जिसमें उनकी कृषिवानिकी सम्बन्धित समस्याओं का निदान करने का प्रयास किया गया। कार्यक्रम में कृषिवानिकी प्रशिक्षण हेतु लगभग 100 किसानों ने प्रतिभागिता की।